वंचित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 अश्वनी कुमार

जन्मोपरान्त बालक निरन्तर विकास करता है। यह विकास वंशानुक्रम के प्रभाव के अन्तर्गत वातावरण के आधार पर होता है। वातावरण का गुणात्मक प्रभाव बालक के विकास में सहायक होता है। प्रत्येक बालक का यह अधिकार है कि वह अपना विकास प्राप्त अभिवृत्तियों और योग्यताओं की उच्चतम सीमा तक करें। हम जानते हैं कि कुछ बालक ऐसे होते हैं जो सुविधाओं की दृष्टि से सामान्य बालकों से कम होते हैं। वे विभिन्न प्रकार की सुविधाओं जैसे – आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं। इन सुविधाओं के अभाव मे उनका विकास सामान्य बालकों के समान नही हो पाता और उनके विकास में गतिरोध आ जाता हैं। इस प्रकार अधिक बौद्धिक क्षमता रखने पर भी वे वातावरणगत सुविधाओं के अभाव में विकास नही कर पाते। वंचन एक ऐसी स्थिति है जो आधारभूत मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं की अपर्याप्त संतुष्टि को दर्शाती हैं। इसे सांस्कृतिक वंचन तथा सांस्कृतिक असुविधा एवं सुविधाओं की कमी के रूप में भी प्रयुक्त किया जा सकता हैं। यह विद्यार्थियों द्वारा प्रत्यक्षीकृत अभावजनक वातावरणीय स्थितियों, अभावग्रस्त अनुभवों तथा मनौवैज्ञानिक, भौतिक, सामाजिक/ आर्थिक तथा अन्य अभावों को भी संदर्भित करता हैं। यह वंचन सामाजिक, सांवेगिक, आर्थिक, शैक्षिक, पैतृक वंचन के रूप में भी हो सकता है।

हर जाति में सुविधा सम्पन्न एवं विपन्न लोग पाये जाते हैं। जब व्यक्ति आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, परिवारिक, विद्यालयी या अन्य सुविधाओं से वंचित होता है तो उसके विकास की प्रक्रिया कमजोर पड़ जाती हैं या रूक जाती हैं। इस वंचन के कारण ही समाज में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, मनोकामनाएँ, मूल्य, व्यक्तित्व, बुद्धि, सोच एवं अन्य कारक प्रभावित होते हैं।

प्रस्तुत शोध में वंचित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को जानने का प्रयास किया गया है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शैक्षिक एवं अनुदेशानात्मक उद्देश्यों, ज्ञान एवं कुछ निश्चित व आवश्यक कौशलों को प्राप्त करने के लिये विद्यार्थियों द्वारा किये गये प्रयासो के परिणाम से है। इस अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धियों का मापन करने के लिये विभिन्न विषयों यथा– हिन्दी, विज्ञान, सामाजिक–विज्ञान विषयों के प्राप्तांको को आधार बनाया गया हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

- उच्च वंचित एवं निम्न वांचित विद्यार्थियों की विभिन्न विषयों में शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करना।

* प्रवक्ता, बी0एड0, बुन्देलखण्ड कॉलेज, झाँसी

- विभिन्न जाति समूहों के उच्च वंचित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करना।
- विभिन्न जाति समूहों के निम्न वांचित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करना।

शोध विधि– प्रस्तुत अध्ययन हेतु वणर्नात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
न्यादर्श का चयन– प्रस्तुत अध्ययन में वाराणसी शहर के माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 8 के छात्र एवं छात्राओं का बहुपदीय यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि द्वारा (150 उच्च एवं 150 निम्न वंचित) चयन किया गया है।

अध्ययन के प्रयुक्त उपकरण –

वंचित विद्यार्थियों का वंचन के आधार पर चयन करने के लिये कल्पलता पाण्डेय द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत वंचन मापनी का प्रयोग किया गया हैं। शैक्षिक उपलब्धि (Educational Achievement) – विद्यालय की वार्षिक परीक्षा में हिन्दी, विज्ञान एवं सामाजिक–विज्ञान विषयों के प्राप्तांको को शैक्षिक उपलब्धि हेतु प्रयुक्त किया गया हैं।

परिणाम व व्याख्या– वर्तमान अध्ययन हेतु जिन उद्देश्यों को लेकर प्रदत्तो का विश्लेषण किया गया उनसे प्राप्त परिणाम तथा निष्कर्ष निम्न हैं–
तालिका 1 उच्च एवं निम्न वंचित विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक विवरण–

जाति समूह	वंचन	मध्यमान	मानक विचलन	C.R
सामान्य	उच्च	49.300	10.185	2.201
	निम्न	53.620	9.225	
पिछड़ी	उच्च	49.240	9.137	1.519
	निम्न	46.480	8.842	
अनुसूचित	उच्च	42.280	8.117	4.918**
	निम्न	51.540	10.385	

**.01 विश्वास स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के उच्च एवं निम्न वंचित विद्यार्थियों के बीच हिन्दी विषय की उपलब्धि में .01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर है। निम्न वंचित विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में उपलब्धि उच्च वंचित विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। सामान्य एवं पिछड़ी जाति के उच्च एवं निम्न वंचित विधार्थियों की हिन्दी उपलब्धि समान है।
तालिका 2 उच्च एवं निम्न वंचित विधार्थियों की विज्ञान विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक विवरण–

जाति समूह	वंचन	मध्यमान	मानक विचलन	C.R
सामान्य	उच्च	41.980	13.423	8.349**
	निम्न	60.140	6.395	
पिछड़ी	उच्च	44.520	10.064	3.768**
	निम्न	52.520	10.938	
अनुसूचित	उच्च	39.400	6.354	6.776**
	निम्न	51.680	10.979	

**.01 विश्वास स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सामान्य, पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के उच्च एवं निम्न वंचित विद्यार्थियों के बीच विज्ञान विषय की उपलब्धि में .01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर है। सामान्य, पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के उच्च वंचित विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न वंचित विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में उपलब्धि अधिक है।

तालिका 3 उच्च एवं निम्न वंचित विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक विवरण–

जाति समूह	वंचन	मध्यमान	मानक विचलन	C.R
सामान्य	उच्च	39.980	6.900	18.585**
	निम्न	70.860	9.827	
पिछड़ी	उच्च	51.120	9.218	3.393**
	निम्न	57.360	8.989	
अनुसूचित	उच्च	43.700	6.982	6.586**
	निम्न	54.280	8.816	

**.01 विश्वास स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि सामान्य, पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के उच्च एवं निम्न वंचित विद्यार्थियों के बीच समाजिक–विज्ञान विषय की उपलब्धि में .01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर है। सामान्य, पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के उच्च वंचित विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न वंचित विद्यार्थियों की सामाजिक–विज्ञान विषय में उपलब्धि अधिक हैं।

तालिका 4 उच्च वंचित विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक विवरण–

जाति समूह	मध्यमान	मानक विचलन	तुलनात्मक समूह	C.R
सामान्य	49.300	10.185	सामान्य एवं पिछड़ी	0.03
पिछड़ी	49.240	9.137	पिछड़ी एवं अनुसूचित	4.03**
अनुसूचित	42.280	8.117	अनुसूचित एवं सामान्य	3.81**

**.01 विश्वास स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि पिछड़ी, अनुसूचित एवं सामान्य जाति के उच्च वंचित विद्यार्थियों के मध्य हिन्दी विषय की उपलब्धि पर .01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया। अर्थात पिछडी जाति एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में उपलब्धि

अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है जबकि सामान्य एवं पिछड़ी जाति के उच्च वंचित विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में उपलब्धि समान है।

तालिका 5 उच्च वंचित विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक विवरण–

जाति समूह	मध्यमान	मानक विचलन	तुलनात्मक समूह	C.R
सामान्य	41.980	13.423	सामान्य एवं पिछड़ी	1.09
पिछड़ी	44.520	10.064	पिछड़ी एवं अनुसूचित	3.04**
अनुसूचित	39.400	6.354	अनुसूचित एवं सामान्य	1.23

**.01 विश्वास स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के उच्च वंचित विद्यार्थियों के मध्य विज्ञान विषय की उपलब्धि पर .01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर है अर्थात विज्ञान विषय में पिछडे वर्ग के विद्यार्थी अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक उपलब्धि रखते है जबकि सामान्य एवं पिछड़ी जाति, सामान्य एवं अनुसूचित जाति के उच्च वंचित विद्यार्थियों के मध्य विज्ञान विषय में उपलब्धि समान है।

तालिका 6 उच्च वंचित विद्यार्थियों की सामाजिक–विज्ञान विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक विवरण –

जाति समूह	मध्यमान	मानक विचलन	तुलनात्मक समूह	C.R
सामान्य	38.980	6.900	सामान्य एवं पिछड़ी	7.15**
पिछड़ी	51.120	9.827	पिछड़ी एवं अनुसूचित	5.12**
अनुसूचित	43.700	6.982	अनुसूचित एवं सामान्य	3.40**

**.01 विश्वास स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि सामान्य एवं पिछड़ी, पिछड़ी एवं अनुसूचित, अनुसूचित एवं सामान्य जाति के उच्च वंचित विद्यार्थियों के सामाजिक–विज्ञान विषय की उपलब्धि में .01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर है अर्थात पिछड़ी जाति के उच्च वंचित विद्यार्थियों की सामाजिक–विज्ञान विषय में उपलब्धि सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के उच्च वंचित विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है।

तालिका 7 निम्न वंचित विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक विवरण–

जाति समूह	मध्यमान	मानक विचलन	तुलनात्मक समूह	C.R
सामान्य	53.620	9.225	सामान्य एवं पिछड़ी	3.95**
पिछड़ी	46.480	8.842	पिछड़ी एवं अनुसूचित	2.62*
अनुसूचित	51.540	10.385	अनुसूचित एवं सामान्य	1.06

*.05 विश्वास स्तर पर सार्थक

**.01 विश्वास स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि सामान्य एवं पिछड़ी जाति के निम्न वंचित विद्यार्थियों के मध्य हिन्दी विषय में उपलब्धि पर .01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर है जबकि पिछड़ी

एवं अनुसूचित जाति के निम्न वंचित विद्यार्थियों के मध्य हिन्दी विषय में उपलब्धि पर .05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर है। दूसरे शब्दों में, सामान्य जाति के निम्न वंचित विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में उपलब्धि पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति के निम्न वंचित विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पायी गयी।

तालिका 8 निम्न वंचित विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक विवरण–

जाति समूह	मध्यमान	मानक विचलन	तुलनात्मक समूह	C.R
सामान्य	60.140	6.395	सामान्य एवं पिछड़ी	4.25**
पिछड़ी	52.520	10.938	पिछड़ी एवं अनुसूचित	0.38
अनुसूचित	51.680	10.979	अनुसूचित एवं सामान्य	4.71**

**.01 विश्वास स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सामान्य एवं पिछड़ी जाति के निम्न वंचित, अनुसूचित जाति एंव सामान्य जाति के निम्न वंचित विद्यार्थियों के मध्य विज्ञान विषय की उपलब्धि पर .01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया। इससे यह स्पष्ट है कि सामान्य जाति के निम्न वंचित विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में उपलब्धि पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति के निम्न वंचित विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक हैं।

तालिका 9 निम्न वंचित विद्यार्थियों की सामाजिक–विज्ञान विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक विवरण–

जाति समूह	मध्यमान	मानक विचलन	तुलनात्मक समूह	C.R
सामान्य	70.860	9.827	सामान्य एवं पिछड़ी	7.17**
पिछड़ी	54.360	8.989	पिछड़ी एवं अनुसूचित	1.73
अनुसूचित	54.280	8.816	अनुसूचित एवं सामान्य	8.89**

**.01 विश्वास स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सामान्य एवं पिछड़ी जाति तथा अनुसूचित एवं सामान्य जाति के निम्न वंचित विद्यार्थियों की सामाजिक–विज्ञान विषय में उपलब्धि के मध्य .01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया। अर्थात सामान्य जाति के निम्न वंचित विद्यार्थियों की सामाजिक–विज्ञान विषय में उपलब्धि पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के निम्न वंचित विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव–

उपर्युक्त शोध से निम्नांकित मुख्य निष्कर्ष प्राप्त हुए:

- सामान्य जाति के उच्च वंचिंत विद्यार्थियों की सामाजिक–विज्ञान विषय में उपलब्धि पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के उच्च वंचित विद्यार्थियों की अपेक्षा कम पायी गयी।
- अनुसूचित जाति के उच्च वंचित विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में उपलब्धि सामान्य एवं पिछड़ी जाति के उच्च वंचित विद्यार्थी की अपेक्षा कम पायी गयी।

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष से यह ज्ञात होता है कि सामान्य जाति के उच्च वंचित छात्रों की सामाजिक–विज्ञान विषय में उपलब्धि अन्य शैक्षिक विषयों (विज्ञान एवं हिन्दी) एवं अन्य जातियों की शैक्षिक उपलब्धि से कम है। सामाजिक–विज्ञान एक ऐसा महत्वपूर्ण विषय है जो

विद्यार्थियों को उनके देश–विदेश की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं भौगोलिक संरचना से परिचित कराता है। इस विषय में उपर्युक्त वर्ग के विद्यार्थियों की निम्न उपलब्धि इस बात का संकेत करती है कि उनके अन्दर इस विषय के प्रति उपेक्षा का भाव है। यह शोध यह सुझाव देता है कि शिक्षक को अपनी शिक्षण–विधियों में परिमार्जन करना एवं सामाजिक–विज्ञान विषय के शिक्षण को रोचक एवं सर्वग्राही बना चाहिए जिससे छात्रों की इस विषय में रूचि एवं उपलब्धि बढ़ सके। दूसरी ओर अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि अनुसूचित जाति के उच्च वंचित विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में उपलब्धि अन्य जातियों के छात्रों की विज्ञान विषय में उपलब्धि से कम है। यह परिणाम अनुसूचित जाति के उच्च वंचित छात्रों की विज्ञान विषय में अरूचि को प्रकट करता है। समाज का सबसे उपेक्षित वर्ग होने के कारण उचित सुविधाओं के अभाव में एवं घर पर शिक्षण के अभाव में अनुसूचित जाति के उच्च वंचित विद्यार्थियों में इस विषय के प्रति रूचि जागृत नही हो पाती। अतएव शिक्षकों एवं अभिभावकों को इन छात्रों की रूचि एवं उपलब्धि बढाने के लिये अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन एवं प्रयोगशाला सुविधाओं का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए ताकि अनुसूचित जाति के वंचित विद्यार्थियों को सही मार्गदर्शन मिल सके। इसके साथ ही सरकारी हस्तक्षेप और सरकारी व्यवस्थाओं को लचीला बनाया जाना चाहिए जैसे – प्रवेश, शुल्क इत्यादि। साथ ही सरकार को अपने द्वारा दी गयी व्यवस्थाओं का समय–समय पर मूल्यांकन भी करते रहना चाहिए जिससे वंचित वर्ग के विद्यार्थियों को भी समाज की मुख्य धारा में लाया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- कुमार ए. (2007) – विभिन्न जातीय समूहों के वंचित विद्यार्थियों की मनोकामनाओं, मूल्यों एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित पीएच–डी. शिक्षा संकाय : म0गां0 काशी विद्यापीठ वाराणसी।
- पाण्डेय, के0 (1985) डिप्राइब्ड स्टूडैन्ट्स, कॉगनीटिव प्रोसेसेज, मोटिव्स एण्ड एचीवमेन्ट, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी।
- बालसुब्रमण्यम, एन0 (1994) स्टडी ऑफ एन एकेडेमिक एचिवमेन्ट इन रिलेशन टू एचिवमेन्ट, वेल्यूज एण्ड सोसाइटी, पर्सपेक्टिव इन एजुकेशन, वाल्यूम 10 (2), 109–113 इन इण्डियन एजुकेशनल एबस्ट्रेक्ट इश्यू 4, जनवरी 1998।
- दूबे, गीता (2002) ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ वेल्यूज, एचिवमेन्ट मोटिवेशन एण्ड मॉरल जजमेन्ट एमंग द एडोलेसेन्ट्स स्टडीइंग इन स्कूल्स रन बाई वैरियस एजुकेशनल एजेन्सीज, अनपब्लिश्ड पीएच0डी0 थीसिस, फैकल्टी ऑफ एजुकेशन एम0जी0 काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
- विजय लक्ष्मी (1980) एकेडेमिक एचिवमेन्ट ऑफ एस0सी0 एण्ड बी0सी0 कास्ट : इण्डियन साइकोलोजिकल रिव्यू, वाल्यूम 44 नं0 5–6, 1–4.।